सफलता की कहानी
संपूर्ण स्वच्छता अभियान परियोजना-
खम्माम
आंध्र प्रदेश

खम्माम जिलों में 46 मंडल है जो चार राजस्व प्रखण्डों- खम्माम, खाटागुडेम, पलौया और मद्रचालम में बंटे हुए हैं। खम्मान, आंध्र प्रदेश में पर्यटन, कृषि, उद्योग, खनिज और विकास गतिविधियों के महत्वपूर्ण गंतव्यों में से एक होने के कारण सुर्खियों में रहा है।

खम्मान जिले के दो मंडल यथा सथुपल्ली और धम्मपेटा के शतप्रतिशत खुले में शौच रहित मंडलों की स्थिति प्राप्त करने की सूचना मिली है। संपूर्ण स्वच्छता अभियान की अंतिम उपलब्धि। यहां तक की धम्मपेटा पहला मंडल था जिसने अपने लक्ष्य की तुलना में पूर्ण कवरेज प्राप्त किया, और इस सफलता की कहानी को आगे बढ़ाने के लिए सतुपल्ली मंडल को प्रेरित कर एक उत्प्रेरक की भूमिका निभा रहा है। सतुपल्ली और धम्मपेटा में क्रमश: 13320 और 11066 के लक्ष्य की तुलना में वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों के निर्माण में 100% कवरेज प्राप्त हुआ है।

यही ट्रेंड सतुपल्ली(57 स्कूल) और धम्मपेटा(102 स्कूल) में कार्यशील जल आपूर्ति और स्वच्छता कवरेज में 100% उपलब्धि के साथ स्कूली स्वच्छता कवरेज में दर्शाई गई है। सतुपल्ली में 55 बसावटों को कवर करते हुए 177 किमी लंबी निकासी प्रणाली भी बनाई गई है। खम्माम टीएससी परियोजना जिले में भी 1034 के लक्ष्य की तुलना में 708 स्कूलों को कवर किया है।

शुरूआत में समुदाय द्वारा कुछ दिक्कतें का सामना किया गया जिसने आईएचएचएल के निर्माण की प्रक्रिया को धीमा कर दिया। किंतु विशेषत: इन दो मंडलों में समर्पित और प्रेरित टीम प्रयास से धीरे ही सही पर स्पष्ट रूप से ऐसा कवरेज संभव कर दिया है। बहुत से लोग इसका क्षेत्र दिसंबर 2000 में हुए उल्लेखनीय कार्यशाला को देते हैं जिसमें सरपंच, एडब्ल्यूडब्ल्यू, एएनएम, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, जिला परियोजना अधिकारी जैसे कि डीसी, एसई-आरडब्ल्यूएस, सदस्य सचिव, डीडब्ल्यूएससी, क्षेत्र मॉनीटरों और मंडल इंजीनियरों को जोड़कर कुल 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला ने ग्राम स्तर पर आईएचएचएल का निर्माण करने हेतु ग्रामीणों को प्रोत्साहित करने के लिए जमीनी स्तर के प्रतिभागियों को मनाने

में वाकई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस कार्यशाला का संचालन प्रतिभागी तरीके से किया गया था और इससे प्रतिभागियों को प्रेरणा और अपने मंडलों को खुले में शौच से मुक्त करने के सपने से ओत-प्रोत किया गया। इस कार्यशाला को संरचनात्मक ढंग से डिजाइन किए सामुदायिक एकजुटता प्रक्रिया, जागरूकता और आईईसी के माध्यम से मांग सृजन और सभी स्टेकहोल्डरों के क्षमता निर्माण के माध्यम से अनुपूरित किया गया था। डीसी और अध्यक्ष, के सूचित दिशा-निर्देश के तहत, डीडब्ल्यूएससी, खम्माम, क्षेत्र मॉनीटरों और मंडल इंजीनियरों समुदाय को एकजुट करने की चुनौती ली है और सफलतापूर्वक अच्छे परिणाम प्रस्तुत किए। उन्होंने न केवल आईएचएचएल और स्कूल स्वच्छता कवरेज में पूर्ण कवरेज को सुनिश्चित किया। वरन् साथ ही इन दो मंडलों के सभी 35 पंचायतों में डब्ल्यूएटीएसएएन समितियां भी स्थापित की हैं। स्कूली शिक्षण समितियों की सहायता से ग्रामीण स्कूलों पर विशेष ध्यान बनाया गया जिसने न केवल स्कूलों को स्वच्छता का स्थान बनाया वरन् साथ ही जल एवं स्वच्छता प्रणाली के संस्थापना हेतु पूर्ण सामुदायिक अंशदान भी सुनिश्चित किया है। स्कूलों में बच्चों को साफ-सफाई की आदतों को अपनाने के लिए सुदृढ़ आईईसी के माध्यम से वास्तविक हार्डवयेर को सहायता दी गई। इस प्रकार से टीएससी परियोजना ने वास्तव में ऐ संतुलन बनाया है, जिससे कि भविष्य में स्वास्थ्य और साफ-सफाई में और बेहतर परिणाम प्राप्त होने की आशा है।

आईएचएचएल के निर्माण हेतु सभी आरसीसी-रिंग्स स्थानीय तौर पर बनाए गए। ग्रामीणों ने इन दो मंडलों में स्थापित 3आरएसएम से अपनी चुनी हुई शौचालय की खरीद की है। मयम्मा, जो कि धम्मपेटा की एक महिला है कहती है। ''पहले हमें नित्य-क्रिया करने के लिए जाने में बहुत कठिनाई होती थी पर अब सुविधा होती है।''

सफलता के कई पहलू है। आईईसी घटकों के व्यापक और सृजनात्मक उपयोग जैसे कि नुक्कड़ नाटक, संगीत, दीवार चित्रकारी आदि ने एकजुटताके इस मुहीम को और रोचक और विश्वसनीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तत्कालीनजिला कलैक्टर, खम्माम, ए.गिरधर कहते हैं अधिक बल कम लागत के आईसी आर्थात् वैयक्तिक व्यक्तिगत संपर्क प्रक्रिया पर दिया गया न कि फ्लिप चार्टया फेस्टरों पर के आगे बताते हैं कि जागरुकता बहुत साधारण उपायों के माध्यम से सृजित की जानी है जैसे कि लोगों को स्वच्छता अपनाने के लिए व्यक्तिगत संपर्क बनाना उन तक बात पहुंचाना। स्वच्छता अभियान की प्रधानशीलता इस बात से समझी जा सकती है कि कुछ 200 गांवों ने स्वयं आगे आकर अपने गांवों में शौचालय का निर्माण कराया। यहां तक कि एक जनजाति गांव आईएचएचएलके निर्माण में पूर्णत: कवरेज प्राप्त करने के निकट है। बाह्य सहायता एजेंसियों जैसे कि यूएनआईसीईएफ ने सुविधाएं और सामग्रियां देकर अच्छी सहायता दी है जिससे समुदाय के संदेह दूर करने में सहायता मिली है। इसके साथ ही

प्रतिबद्ध तकनीकी और वित्तीय सहायता एवं राज्य सरकार से नियमित मॉनीटरिंग प्रयासों से टीएससी दिशा-निर्देशों के संकल्पना के अधीन परियोजनाओं के शीघ्र और प्रभावशाली कार्यान्वयन का रास्ता प्रशस्त किया है।

रोचक ढंग से इस समूचे स्वच्छता पहल को बिना किसी एनजीओ की भूमिका के शुरूकिया गया। इसका श्रेय अवश्य ही जिला परियोजना अधिकारियों, जिला पंचायत, ग्राम समुदाय, मंडल प्रजापति समितियों, पंचायतों आदि को उनके अनोखे और उत्कृष्ट उपलब्धि को जाता है।